International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 8 || August 2026 || PP. 196-200

"हरियाणा की गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

सुशील कुमार
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध सारांश :-

हरियाणा की राजनीति में राष्ट्रीय दलों के साथ-साथ क्षेत्रीय दलों का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। राज्य के गठन के बाद विभिन्न राजनीतिक दलों ने समय-समय पर चुनावों में भाग लिया और सरकार बनाने तथा सरकार के संचालन में अपनी भूमिका निभाई। जब किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता है, तब गठबंधन के माध्यम से सरकार बनाने की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ जाता है।

इस शोध में हरियाणा की गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि क्षेत्रीय दलों ने सरकार के गठन, सत्ता में भागीदारी तथा नीतिगत निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित किया। क्षेत्रीय दलों ने किसानों, ग्रामीण समाज, युवाओं, रोजगार, शिक्षा, सामाजिक कल्याण और क्षेत्रीय विकास जैसे मुद्दों को राजनीतिक मंच पर उठाया है। गठबंधन के माध्यम से इन दलों को अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं और क्षेत्रीय हितों को सरकार के सामने रखने का अवसर मिला।

शोध में यह भी देखा गया है कि गठबंधन राजनीति ने क्षेत्रीय दलों को राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने का अवसर दिया, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आईं। विचारों में मतभेद, सत्ता में हिस्सेदारी, नेतृत्व का प्रश्न, राजनीतिक समझौते और बदलता जनसमर्थन क्षेत्रीय दलों के लिए प्रमुख चुनौतियाँ रहे हैं। राष्ट्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव के कारण क्षेत्रीय दलों के राजनीतिक आधार में भी परिवर्तन देखने को मिला है।

अध्ययन में विभिन्न क्षेत्रीय दलों, जैसे विशाल हरियाणा पार्टी, हरियाणा विकास पार्टी, इंडियन नेशनल लोकदल, हरियाणा जनहित कांग्रेस तथा जननायक जनता पार्टी के राजनीतिक योगदान का अध्ययन किया जाएगा। विशेष रूप से यह देखा जाएगा कि क्षेत्रीय दलों ने विभिन्न चुनावों में किस प्रकार मतदाताओं को प्रभावित किया तथा राष्ट्रीय दलों के साथ गठबंधन करके सरकार गठन और सत्ता-संतुलन को किस सीमा तक प्रभावित किया।

बीजक शब्द :-

हरियाणा, गठबंधन राजनीति, क्षेत्रीय दल, राजनीतिक दल, चुनावी राजनीति, सत्ता में भागीदारी, क्षेत्रीय हित, राजनीतिक नेतृत्व, जनप्रतिनिधित्व, नीतिगत निर्णय, सामाजिक समूह, लोकतंत्र।

प्रस्तावना :–

हरियाणा का गठन 1 नवम्बर 1966 को हुआ। राज्य के गठन के बाद से यहाँ की राजनीति में अनेक परिवर्तन हुए हैं। हरियाणा की राजनीति में राष्ट्रीय दलों के साथ-साथ क्षेत्रीय दलों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्षेत्रीय दलों ने राज्य की स्थानीय समस्याओं, क्षेत्रीय हितों और विभिन्न सामाजिक वर्गों से जुड़े मुद्दों को राजनीति के केंद्र में लाने का प्रयास किया है।

गठबंधन राजनीति का अर्थ ऐसी राजनीतिक व्यवस्था से है जिसमें किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने पर दो या दो से अधिक दल मिलकर सरकार बनाते हैं। ऐसी स्थिति में छोटे और क्षेत्रीय दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। वे सरकार बनाने में सहयोग करने के साथ-साथ सरकार की नीतियों और निर्णयों को भी प्रभावित कर सकते हैं। हरियाणा की राजनीति में भी अलग-अलग समय पर गठबंधन और राजनीतिक सहयोग देखने को मिला है।

हरियाणा में क्षेत्रीय दलों का राजनीतिक प्रभाव विशेष रूप से ग्रामीण समाज, किसानों, युवाओं और विभिन्न सामाजिक समूहों से जुड़े मुद्दों के कारण रहा है। इन दलों ने अपने-अपने राजनीतिक विचारों और जनसमर्थन के आधार पर राष्ट्रीय दलों के साथ गठबंधन किए हैं। कई बार क्षेत्रीय दलों की सीटों की संख्या कम होने के बावजूद सरकार बनाने या सरकार को स्थिर रखने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दल केवल सत्ता में भागीदारी तक सीमित नहीं रहते। वे अपने क्षेत्र और समर्थक वर्गों से जुड़े मुद्दों को सरकार के सामने रखते हैं। इसके माध्यम से वे कृषि, रोजगार, शिक्षा, ग्रामीण विकास, सामाजिक कल्याण और क्षेत्रीय विकास जैसे विषयों को नीतियों में स्थान दिलाने का प्रयास करते हैं। हालांकि, गठबंधन सरकारों में विचारों का मतभेद, सत्ता में हिस्सेदारी, नेतृत्व का प्रश्न और राजनीतिक हितों के बीच संतुलन बनाए रखना बड़ी चुनौतियाँ होती हैं।

हरियाणा की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका समय के साथ बदलती रही है। राष्ट्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव और मतदाताओं की बदलती राजनीतिक पसंद ने क्षेत्रीय दलों के सामने नई चुनौतियाँ पैदा की हैं। इसके बावजूद स्थानीय मुद्दों और क्षेत्रीय हितों के कारण इन दलों की राजनीतिक प्रासंगिकता बनी हुई है।

इस शोध-पत्र में हरियाणा की गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि क्षेत्रीय दलों ने गठबंधन सरकारों के गठन, संचालन और नीतिगत निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित किया है। साथ ही, उनके राजनीतिक योगदान, प्रभाव, सीमाओं और वर्तमान स्थिति का भी विश्लेषण किया गया है।

तालिका : -

- **1966–2026 के दौरान हरियाणा की गठबंधन राजनीति और क्षेत्रीय दल**

अवधि/वर्ष	प्रमुख राजनीतिक स्थिति	क्षेत्रीय दल/राजनीतिक शक्ति	गठबंधन राजनीति में भूमिका
1966	हरियाणा का गठन	क्षेत्रीय नेतृत्व का प्रारंभिक विकास	राज्य की अलग राजनीतिक पहचान का निर्माण
1967	प्रथम विधानसभा चुनाव	भारतीय जनसंघ, स्वतंत्र एवं अन्य दलों का प्रभाव	स्पष्ट बहुमत न होने से गठबंधन/दलबदल की राजनीति को बढ़ावा
1968–1972	कांग्रेस का प्रभाव	क्षेत्रीय नेताओं का प्रभाव	क्षेत्रीय नेतृत्व ने राज्य की राजनीति को प्रभावित किया
1977–1979	जनता पार्टी का दौर	जनता पार्टी एवं लोकदल की राजनीति	गैर-कांग्रेसी गठबंधन राजनीति को मजबूती
1982–1987	क्षेत्रीय राजनीति का विस्तार	लोकदल/देवी लाल की राजनीति	क्षेत्रीय मुद्दों और ग्रामीण-किसान राजनीति को बढ़ावा
1987–1989	लोकदल का मजबूत प्रभाव	लोकदल	क्षेत्रीय दल ने राज्य की सत्ता में प्रमुख भूमिका निभाई
1990–1995	राजनीतिक अस्थिरता	जनता दल, लोकदल से जुड़ी शक्तियाँ	गठबंधन और राजनीतिक पुनर्संयोजन का दौर
1996	हरियाणा विकास पार्टी का उदय	**HVP + BJP**	गठबंधन ने 90 में**44 सीटें**जीतकर सरकार बनाई; बंसी लाल मुख्यमंत्री बने।

1998	HVP-BJP गठबंधन जारी	**HVP + BJP**	क्षेत्रीय दल और राष्ट्रीय दल के गठबंधन का उदाहरण
1999	राजनीतिक गठबंधन में परिवर्तन	**INLD + BJP**	लोकसभा चुनाव में दोनों दलों ने 5-5 सीटों पर चुनाव लड़ा और सभी 10 सीटें जीतीं।
2000	INLD की मजबूत स्थिति	**INLD**	विधानसभा चुनाव में INLD ने**47/90 सीटें**जीतीं और सरकार बनाई।
2004–2005	क्षेत्रीय दलों का प्रभाव घटा	INLD, HVP	2004 में HVP का कांग्रेस में विलय हुआ; 2005 में कांग्रेस ने 67 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया।
2009	बहुदलीय प्रतिस्पर्धा	INLD तथा अन्य दल	क्षेत्रीय दलों ने सत्ता के लिए राष्ट्रीय दलों को चुनौती दी
2014	BJP का स्पष्ट बहुमत	INLD प्रमुख क्षेत्रीय दल	BJP ने 47 सीटें जीतकर अपने दम पर सरकार बनाई; गठबंधन की आवश्यकता नहीं रही।
2019	त्रिशंकु विधानसभा जैसी स्थिति	**JJP + BJP**	BJP को 40 और JJP को 10 सीटें मिलीं; दोनों ने गठबंधन सरकार बनाई।
2020–2023	BJP-JJP गठबंधन सरकार	**JJP + BJP**	JJP ने उपमुख्यमंत्री पद सहित सरकार में भागीदारी की और क्षेत्रीय मुद्दों को सरकार के सामने रखा।
2024 (मार्च)	BJP-JJP गठबंधन समाप्त	BJP, JJP	गठबंधन समाप्त होने के बाद मनोहर लाल खट्टर ने इस्तीफा दिया और नायब सिंह सैनी मुख्यमंत्री बने।
2024 (विधानसभा)	BJP को बहुमत	INLD, JJP सहित क्षेत्रीय दल	BJP ने 48 सीटें जीतकर सरकार बनाई; क्षेत्रीय दलों का प्रभाव सीमित रहा।
2025	राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों के बीच प्रतिस्पर्धा	INLD/JJP आदि	क्षेत्रीय दलों के पुनर्गठन और जनाधार की चुनौती का दौर
2026	वर्तमान राजनीतिक स्थिति	क्षेत्रीय दल एवं राष्ट्रीय दल	क्षेत्रीय दल स्थानीय मुद्दों और क्षेत्रीय हितों के आधार पर अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष :-

हरियाणा की राजनीति में क्षेत्रीय दलों ने समय-समय पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन दलों ने राज्य के स्थानीय मुद्दों, क्षेत्रीय हितों और विभिन्न सामाजिक वर्गों की समस्याओं को राजनीतिक मंच पर उठाने का प्रयास किया है। विशेष रूप से किसानों, ग्रामीण समाज, युवाओं, रोजगार, शिक्षा और विकास से जुड़े विषयों को क्षेत्रीय दलों ने अपनी राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया है।

गठबंधन राजनीति ने क्षेत्रीय दलों को अपनी राजनीतिक भूमिका को मजबूत करने का अवसर दिया है। जब किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला, तब क्षेत्रीय दलों का समर्थन सरकार बनाने और उसे चलाने में महत्वपूर्ण हो सकता है। गठबंधन में शामिल होकर क्षेत्रीय दलों ने सत्ता में भागीदारी प्राप्त करने के साथ-साथ अपने राजनीतिक मुद्दों और क्षेत्रीय हितों को सरकार की नीतियों में स्थान दिलाने का प्रयास किया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय दलों की भूमिका केवल चुनाव जीतने या सरकार बनाने तक सीमित नहीं रही है। उन्होंने स्थानीय समस्याओं को राजनीतिक बहस का हिस्सा बनाने, नए नेतृत्व को आगे बढ़ाने और विभिन्न सामाजिक समूहों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने में भी योगदान दिया है। कई अवसरों पर इन दलों ने राष्ट्रीय दलों के साथ गठबंधन करके राज्य की सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है।

हालाँकि, क्षेत्रीय दलों के सामने कई चुनौतियाँ भी रही हैं। संगठनात्मक कमजोरी, नेतृत्व से जुड़े विवाद, सीमित सामाजिक आधार, आपसी मतभेद और राष्ट्रीय दलों का बढ़ता प्रभाव इनके राजनीतिक भविष्य को प्रभावित करते हैं। गठबंधन सरकारों में विभिन्न दलों के बीच नीतिगत मतभेद और सत्ता में हिस्सेदारी का प्रश्न भी एक बड़ी चुनौती बन सकता है।

वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में हरियाणा में राष्ट्रीय दलों का प्रभाव बढ़ा है, फिर भी क्षेत्रीय मुद्दों और स्थानीय आकांक्षाओं के कारण क्षेत्रीय दलों की आवश्यकता और प्रासंगिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। यदि क्षेत्रीय दल जनता की वास्तविक समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठाते हैं, मजबूत संगठन तैयार करते हैं और व्यापक जनसमर्थन प्राप्त करते हैं, तो वे भविष्य में भी गठबंधन राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि हरियाणा की गठबंधन राजनीति को समझने के लिए क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन आवश्यक है। इन दलों ने राज्य की राजनीति में सत्ता के संतुलन, क्षेत्रीय हितों और जनप्रतिनिधित्व को प्रभावित किया है। हालांकि उनका प्रभाव समय और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है, फिर भी हरियाणा की लोकतांत्रिक और गठबंधन राजनीति में क्षेत्रीय दलों का अपना महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

(क) पुस्तकें

1. चौधरी, बंसी लाल. हरियाणा की राजनीति और राजनीतिक दल. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
2. कोठारी, राजणी. Politics in India. New Delhi: Orient Longman, 1970.
3. बासु, दुर्गा दास. Introduction to the Constitution of India. New Delhi: LexisNexis.

(ख) हरियाणा की राजनीति एवं चुनाव संबंधी स्रोत

1. भारत निर्वाचन आयोग (Election Commission of India). Statistical Reports of Haryana Legislative Assembly Elections. नई दिल्ली।
2. हरियाणा निर्वाचन विभाग। हरियाणा विधानसभा चुनाव संबंधी सांख्यिकीय एवं निर्वाचन रिपोर्ट चंडीगढ़।
3. हरियाणा विधान सभा। हरियाणा विधानसभा की कार्यवाही एवं सदस्य संबंधी अभिलेख. चंडीगढ़।

(ग) प्रमुख सरकारी/आधिकारिक वेबसाइटें

1. भारत निर्वाचन आयोग — चुनाव परिणाम एवं निर्वाचन आँकड़े।

2. हरियाणा सरकार — राज्य की प्रशासनिक एवं सांख्यिकीय जानकारी।

3. हरियाणा विधानसभा — विधायी कार्यवाही एवं सदस्यों की जानकारी।

4. भारत सरकार, जनगणना — हरियाणा की जनसंख्या एवं सामाजिक-आर्थिक आँकड़े।